वर्तमान युग में बौद्ध धर्म की प्रासांगिकता

डॉ0 चन्दा राय

मानव का कल्याण करता है परन्तु व्यवहार में यह पूर्णतया सही नहीं है। इतिहास गवाह है कि संसार में जितनी हिंसा धर्म के नाम पर हुयी है उतनी हिंसा अब तक के विश्वयुद्धों में नही हुई है। यह सब धार्मिक उन्माद, कट्टरपंथी एवं अपने धर्म को दूसरों पर जबरदस्ती थोपने के कारण हुआ है। धर्म के नाम पर संहार करने से मानव मात्र को नुक्सान हुआ है यह केवल बौद्ध धम्म ही है जिसने संहार को अस्विकार करते हुए करूणा व मैत्री जैसे सदृगुणों के कण को संसार में पिरोने का कार्य किया जिसके परिणाम स्वरूप बौद्ध धम्म अपनी नैतिकता एवं सर्व कल्याणकारी शिक्षाओं के कारण स्वतः प्रसारित होते रहा है।

वैर को जन्म देने वाले कारकों को बुद्ध ने पहचान कर उनको दूर करने का मार्ग बहुत पहले ही प्रशस्त किया था, उन्होंने मानवमात्र के दुखों को कम करने के लिए पंचशील और अष्टांगिक मार्ग के नैतिक एवं कल्याणकारी जीवन दर्शन का प्रतिपादन किया था। यह ऐतिहासिक तौर पर प्रमाणित है कि बौद्ध काल मे जब ''बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय'' के बौद्ध मार्ग का शासकों और आम जन द्वारा अनुसरण किया गया तो वह काल सुख एवं समृधि के कारण भारत के इतिहास का ''स्वर्णयुग'' कहलाया उस समय शान्ति और समृद्धि फैली इसके साथ ही दुनिया के जिन देशों में बौद्ध धम्म फैला, उन देशों में भी सुख, शान्ति तथा समृधि फैली। अतः बौद्ध धम्म का पंचशील और अष्टांगिक मार्ग आज भी विश्व में शान्ति और कल्याण हेतु बहुत सार्थक है।